National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 1021-1022

माध्यमिक विद्यालयों के कार्यरत शिक्षकों में जीवन संतुष्टि का अध्ययन

Niraj Kumar Singh
Research Scholar, Department of Education, Shri Venkateshwara University, Uttar Pradesh, India

प्रस्तावना

शिक्षक ही विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है। भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण संसार में शिक्षण को एक उत्तम व्यवसाय माना गया है। अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति का निर्माण करता है और राष्ट्र के भावी कर्णधारों के भविष्य को संरक्षण प्रदान करता है। कोठारी कमीशन[1] (1964) ने कहा था कि – '' भारत के भाग्य का निर्माण इस समय उसकी कक्षाओं में हो रहा है।'' ऐसी स्थिति में भाग्य निर्माता ही यदि संतुष्ट न हो तो सुदृढ़ राष्ट्र की कल्पना साकार नहीं हो सकती। अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के चयन माप दण्ड एक समान होते हुए भी दोनों के सेवा शर्तो, सुविधाओं, वेतन आदि में अनेक विषमताएँ हैं। इन असमानताओं के होते हुए दोनों के जीवन संतुष्टि में अंतर होना स्वाभाविक प्रतीत होता है। इसे अनुमान का विषय न मानकर इसके वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है।

एडम्स[2] (1971) ने अपने अध्ययन ''कोरिलेट्स आफ लाइफ सैटिसफैक्सन एमांग द एल्डर्ली '' में पाया कि शिक्षा का जीवन संतुष्टि से सकारात्मक संबंध होता है। इरोनेन एवं अन्य[3] (1997) ने अपने अध्ययन में पाया कि जीवन संतुष्टि लिंग, कालक्रमिक आयु, शैक्षिक स्तरों और आर्थिक सामाजिक स्तर से सह सम्बन्धित होती है। सिंह वाई0 जी0[4] (2012) ने शिक्षक जीवन संतुष्टि के अध्यन में पाया कि सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की जीवन संतुष्टि गैर सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की जीवन संतुष्टि की अपेक्षा अधिक होती है। अंजली शर्मा[5] (2012) ने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि निजी और सरकारी स्कूलों के महिला शिक्षकों में जीवन संतुष्टि के प्रति सार्थक अन्तर पाया जाता है।

इस प्रकार अध्ययनों में पाया गया है कि शिक्षकों के जीवन संतुष्टि का शिक्षण से सकारात्मक संबंध होता है। यदि अध्यापक जीवन संतुष्टि से युक्त है तो निःसंदेह शिक्षा का कार्य उत्तम होगा, इसके विपरीत यदि अध्यापक में जीवन संतुष्टि का अभाव है तो शिक्षा पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

उपरोक्त इन सभी बिन्दुओं को ध्यानगत करते हुए शोधकर्ता को जिज्ञासा हुयी कि अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के कार्यरत शिक्षकों में जीवन संतुष्टि का अध्ययन किया जाय। प्रस्तुत शोध अध्ययन इसी पर आधारित है।

शोध उद्देश्य – अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के कार्यरत शिक्षकों में जीवन संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ – Ho_1, अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि – प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन जनसंख्या – इस शोध हेतु उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जनपद में संचालित अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों में वर्ष 2014–15 में कार्यरत शिक्षकों को जीव संख्या के रूप में सम्मिलित किया गया था।

न्यायदर्श चयन – इस अध्ययन के न्यादर्श चयन हेतु यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया। गाजियाबाद जनपद के अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के 300–300 कुल 600 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चुना गया था। इस अध्ययन में पुरूष तथा महिला शिक्षक तथा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालय को सम्मिलित किया गया।

अध्ययन की परिसीमाएँ

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के रूप में गाजियाबाद जनपद में स्थित अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को ही सम्मिलित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

क्यू0 जी0 आलम एवं डा0 रामजी श्रीवास्तव द्वारा निर्मित[6] '' जीवन संतुष्टि मापनी'' का प्रयोग किया गया है।

परिणाम – इस अध्ययन के उद्देश्य के पूर्ति हेतु जिस शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया था उसकी जॉच का वर्णन इस खण्ड में प्रस्तुत किया जा रहा है।

शोध संबंधी समकों का विश्लेषण

अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में जीवन संतुष्टि के प्राप्तांकों के मान की सारणी –

सारणी 1

समूह	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	C.R. मान	सार्थकता	
					0.05	0.01
अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक	300	52.98	5.78	36.03	+	+
गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक	300	29.45	9.75			

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन संतुष्टि प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 52.98 एवं 29.45 है। तथा मानक विचलन क्रमशः 5.78 एवं 9.75 पाया गया। इन दोनों समूहों के क्रांतिक अनुपात का मान 36.03 है। जो 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तरों पर आवश्यक मानों से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन संतुष्टि में सार्थक अंतर है। इसका कारण अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के वेतन, सेवा शर्तो, सुविधाओं आदि में अत्यधिक अंतर का होना हो सकता है।

अतः परिकल्पना – '' अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।'' अस्वीकृत की जाती है।

अध्ययन की सार्थकता – प्रस्तुत शोध अध्ययन कई दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में पूरे देश में अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है। शिक्षकों के जीवन संतुष्टि का संबंध उनकी आर्थिक, सामाजिक, व्यावसायिक, शारीरिक दशाओं से होता है। व्यक्ति में जीवन संतुष्टि की मात्रा से उसके विभिन्न मनोवैज्ञानिक चर तथा दुश्चिंता, अभिवृत्ति, मूल्य आदि प्रभावित होते है। अतः शिक्षा प्रक्रिया में अध्यापक के महत्व को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि एक अध्यापक को मानसिक, शारीरिक, सांवेगिक रूप से पूर्णतया स्वस्थ हो उसमें जीवन संतुष्टि के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण भी होनी चाहिए। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष यह इंगित करते हैं कि अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में जीवन संतुष्टि में भारी अंतर है। गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की यह स्थिति निश्चित ही शिक्षण के शुभ संकेत नहीं हैं। ऐसी स्थिति में इनसे शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति असम्भव नहीं तो संदिग्ध अवश्य है। हमारे सरकार तथा समाज द्वारा इस दिशा में विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है। सरकार को ऐसी नीति निर्धारण करना चाहिए जिससे दोनों समूहों के शिक्षकों की सेवा शर्ते वेतन आदि में समानता हो, जिससे वे निश्चित होकर शिक्षक कार्य कर सकें एवं शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में अपना सर्वोत्तम योगदान कर सकें।

संदर्भ

1. दि रिपोर्ट ऑफ दि एजूकेशन कमीषन (1966) गवर्नमेण्ट ऑफ इण्डिया, मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन एण्ड नेशनल डेवलपमेन्ट, मैनेजमेन्ट ऑफ पब्लिकेशन, डेलही।
2. एडम्स पी0 (1971) कोरिलेट्स आफ सैटिसफैक्सन एमांग द एल्डर्ली गरोन्टोलाजिस्ट. II, पी0पी0 41–47.
3. इरोनेन, एम0के0 एवं अन्य (1997) डज एजिंग मीन ए वेटर लाइफ फार वुमेन, जरनल ऑफ द अमेरिकन जिरएट्रिक सोसाइटी. 45, पी0पी0, 41–47.
4. सिंह0 वाई0 जी0 (2012) लाइफ सेटिंसफेक्सन आफ स्कूल टीचर इन रिलेशन टू जनरल डेमों ग्राफी, इन्टरनेशनल रिफर्ड रिसर्च जर्नल फरवरी 2012 वाल्यूम III.
5. शर्मा, अंजली (2012) स्टडी ऑफ लाइफ सेटिसफैक्सन एमांग फीमेल टीचर्स ऑफ प्राइवेट एण्ड गवर्नमेन्ट स्कूल. इण्टरनेशनल इन्डेक्सेड एण्ड रीफर्ड रिसर्च जरनल. पी0पी0–48 :55.
6. आलम, क्यू0जी0 एवं श्रीवास्तव रामजी (1971) मैनुअल फार लाइफ सेटिसफैक्सन स्केल, नेशनल साइकोलाजी कारपोरेशन, कचेहरी घाट, आगरा।
7. गुप्ता एस0 पी0 एवं गुप्ता अलका (2008) सांख्कीय विधियॉ, शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद।
8. गुप्ता, एस0 पी0 एवं गुप्ता, अल्का (2008) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद।
9. बुच, एम0बी0 (2005) ए सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिर्सच इट्स सर्वे. एन0सी0ई0आर0टी0।
10. सिंह, अरूण कुमार (2006) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षामें शोध विधियॉ, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन वाराणसी।
11. कौल, लोकेश (2009) मेथडालाजी ऑफ एजूकेशनल रिर्सच, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिग हाउस।
12. मंगल, एस0के0 (2010) एडवांस एजुकेशनल साइकोलाजी, नई दिल्ली, पी0एच0आई0